६–प्रच्छ (पूछना) मुनि मार्गं पृच्छति (मुनि से रास्ता पूछता है।)

७- चि (बटोरना) लताम् चिनोति पुष्पाणि (बेल से फूल चुनता है।)

८- ब्रू (बोलना) शिष्यं धर्मं ब्रूते (शिष्य से धर्म की बात कहता है।)

९- शास् (शासन करना) गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति (गुरु शिष्य को धर्म की बात बताता है)

इस कारिका में गिनाई गयी धातुएँ तथा इनकी पर्यायवाची धातुएँ भी सम्मिलित समझनी चाहिएँ।

१०–जि (जीतना) शत्रु शतं जयति (दुश्मन से सौ जीतता है)।

११–मन्थ् (मथना) क्षीरसागरममृतं मथ्नन्ति (क्षीरसागर से अमृत मथते हैं)।

१२–मुष् (चोरना) चौरः राजानं सहस्रं मुष्णाति (चोर राजा के हजार रुपये चुराता है)।

१३-नी, (ले जाना) सः ग्राममजां नयति (वह गाँव को बकरी ले जाता है)।

१४- वह् (ले जाना) सः ग्राममजां वहति (वह गाँव को बकरी ले जाता है)।

१५- हृ (चुराना) चौरः कृपणं धनमहरत् (चोर कंजस का धन ले गया),

१६-कृष् (खोदना) नराः वसुधां रत्नानि कर्षन्ति (लोग जमान रत्न निकालते हैं।)

द्विकर्मक धातुओं के कर्मवाच्य बनाने में दुह् धातु से मुष् तक के गौण कर्म में और नी, हृ, कृष्, वह् के प्रधान कर्म में प्रथमा लगाते है, शेष कर्मों में अर्थात् दुह् धातु से मुष् तक के प्रधान कर्म में और नी, हृ, कृष्, वह् के गौण कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है, यथा -

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
गोपः धेनुं पयो दोधि।	गोपेन धेनुः पयो दुह्यते।
देवाः समुद्रं सुधां मन्मथुः।	देवैः समुद्रः सुधां मन्मथे।
कोऽजां ग्रामं नयति।	तेन अजा ग्रामं नीयते।

करण कारक-तृतीया

साधकतमं करणम्

क्रिया की सिद्धि में जो अत्यन्त सहायक होता है उसे करण कहते हैं।

कर्तृकरणयोस्तृतीया

करण में तृतीया विभक्ति होती है और कर्मवाच्य या भाववाच्य के कर्ता में भी तृतीया विभक्ति होती है। 'लता जलेन प्रक्षालयति' में धोने में जल अत्यंत सहायक है। अतः उसमें तृतीया विभक्ति हुई है। साधारण रूप से तो मुंह धोने में लता अपने हाथ तथा जलपात्र दोनों की सहायता लेती है, हाथ न लगाएगी तो मुंह किस प्रकार धो सकेगी तथा जलपात्र न होगा तो जल किसमें रखेगी। अत: यह मानी हुई बात है कि लता मुँह धोने में हाथ और जलपात्र की सहायता लेती है, किन्तु मुँह धोने में सबसे अधिक आवश्यकता पानी की है अतः वही अधिक सहायक हुआ।

इनमें भी तृतीया होती है-

कर्मवाच्य- मया गृहं गम्यते ।

भाववाच्य - तेन हस्यते ।

करण या क्रिया-विशेषण के कारण यहाँ तृतीया होती है,

यथा—राष्ट्रपति: विमानेन याति ।

जीवितेन शपामि।

विधिना पूज्यति ।

भर्तुराज्ञां मूर्ध्ना आदाय -----

द्रव्येण हीनः जनः।

इत्थंभूतलक्षणे

जिस लक्षण (चिह्न) से किसी व्यक्ति या वस्तु का ज्ञान होता है उस लक्षणबोधक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है,

यथा-जटाभिस्तापसः (जटाओं से तपस्वी ज्ञात होता है ।)